देहधारण–ख्रीस्त जयंती का मर्म

देहधारणः अनुग्रह का चमत्कार भाग – 3

डॉ. डेविड प्लॉट

नमस्कार! यदि आपके पास बाइबल हो तो मेरे साथ फिलिप्पियों अध्याय 2 खोल लें। यदि आपने फिलिप्पियों 2:5–11 कंठस्थ किया है तो अच्छा है अन्यथा आप चाहें तो बुरा मानें।

फिलिप्पियों 2:5 का सारांश यह है कि आपका स्वभाव मसीह यीशु का सा हो और वह यीशु का चरित्र–चित्रण प्रदान करता है। पद 6 में देखिए, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।" पद 7, "वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।"

अब पद 8, "और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

अपने पिछले अध्ययनों में हमने दो पदों पर मनन किया था। पद 6 में हमने देखा था कि वह किस प्रकार परमेश्वर के स्वरूप में है और परमेश्वर के तुल्य होने का अधिकार प्रकट नहीं किया। पिछले अध्ययन में हमने उसके मानव होने के बारे में अध्ययन किया था कि वह किस प्रकार दास बना– और मनुष्य की समानता में हुआ।

अब हम जो करेंगे वह यह है कि देखेंगे वह पवित्र परमेश्वर कैसे है। देहधारण महत्त्वपूर्ण क्यों है? देहधारण क्यों हुआ? मसीही धर्म को विश्व के अन्य धर्मों से अलग करनेवाला विश्वास कौन सा है? क्या मसीही धर्म में कोई ऐसी बात है जो पूर्णरूप से अद्वैत है?

वर्षों पूर्व इंगलैण्ड में सर्वधर्म सभा हुई जिसमें मसीही धर्म को विशिष्ठ बनानेवाली बात पर चर्चा की गई जब विद्वान वाद–विवाद कर ही रहे थे। तब सी.एस. लूईस आए और पूछा, "समस्या क्या है?" उन्होंने कहा, "हम

यह जानना चाहते हैं कि मसीह धर्म में कोई अद्वैत बात है क्या?" उन्होंने तपाक से कहा, "यह तो बड़ी आसान बात –अनुग्रह है।"

यही देहधारण के "क्यों?" का उत्तर है जिस पर हम विचार करेंगे। यह सोचना कि यीशु देहधारण में परमेश्वर था क्योंकि वह उसके उद्देश्य निमित्त था। अतः हम इस पर मनन करेंगे। और मेरी प्रार्थना यह है कि यदि आप ने इन चर्चा विषयों के बारे में पहले सुना है तो अनुग्रह के समक्ष ऊंघे नहीं जिससे कि हम ऐसे मनुष्य न हों जो अनुग्रह के कारण विस्मित नहीं होते।

पद 8, "और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" इस पद में प्रभु यीशु तीन काम ऐसे करता है जो हमें अबोधगम्य अनुग्रह को समझने में हमारी सहायता करते हैं। पहला, वह श्रेष्ठता से दीनता पर आता है जिससे कि हमें श्रेष्ठता प्राप्त हो। यही फिलिप्पियों 2:8 में व्यक्त है। वह श्रेष्ठता छोड़कर दीन बना कि हम ऊंचे उठाए जाएं।

यहां ध्यान दें कि यीशु ने अपने आप को दीन किया। वह किसी परिस्थिति वश दीन नहीं हुआ था जैसा हमारे साथ होता है। विवाह हमें दीन बनाता है। परन्तु मसीह की दीनता में ऐसा कुछ नहीं हुआ था। किसी ने उसे दीन नहीं बनाया था। उसने स्वयं ही अपने आप को दीन बनाया। मेरे साथ एक अति महत्त्वपूर्ण संदर्भ को देखें– यूहन्ना 10:17, 18 और देखें कि यीशु के साथ इस पृथ्वी पर क्या हुआ। उसका अपमान आकस्मिक नहीं था, वे दुर्भाग्यवश घटनाएं नहीं थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे उस पर झूठा आरोप लगाएंगे, वे संभवतः उस पर मुकद्दमा चलाएंगे, नहीं, वे तो क्रूस पर चढ़ाएंगे। देखिए उसके साथ क्या हो रहा है। वह स्वयं यह सब कर रहा था।

यूहन्ना 10:17, "पिता इसलिए मुझसे प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूं। मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार हैः यह आज्ञा मरे पिता से मुझे मिली है।" आपने सुना कि यीशु क्या कह रहा है? मेरा जीवन मुझसे कोई छीन नहीं सकता। मुझे उसे देने का अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है।

इसका अर्थ यह हुआ कि वह दीन बनाया नहीं गया था। वह स्वयं दीन बना। देहधारी परमेश्वर, यीशु का दीन बनने में क्या अभिप्राय था? हम पिछले अध्ययनों में देख चुके हैं कि उसने मनुष्य का स्वभाव अपनाया,

उसने दास का स्वभाव अपनाया परन्तु मैं उससे भी अधिक गहराई में विचार करना चाहता हूं क्योंकि मनुष्य बन जाने के बाद भी उसने स्वयं को दीन बनाया। यह सर्वोच्य श्रेष्ठता से अधिकाधिक दीनता का परिदृश्य है। दो स्तरों पर विचार करें। पहला, वह अपनी सृष्टि के अधीन था। उसने स्वयं को अपनी सृष्टि के अधीन किया।

हमने पिछले अध्ययन में इसकी चर्चा की थी परन्तु मैं चाहता हू कि आप इसकी व्यावहारिकता पर ध्यान दें। वह मानव बना परन्तु उसका संबन्ध जो मनुष्यों के साथ था उसमें उसकी दीनता दिखाई देती है। जगत के सृष्टिकर्ता को उसकी सृष्टि नहीं पहचानती। जिसकी महिमा संपूर्ण जगत में प्रकट है वह यहां मानव रूप में खड़ा है और मनुष्य उसे एक साधारण मनुष्य समझता है। मत्ती 13 में जब वह अपने घर गया तो वे कहने लगे, "इसको यह सब कहां से मिला?" "क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं?" अर्थात वह एक साधारण मनुष्य और वे उसके उपदेशों पर दोष प्रकट करने लगे।

संपूर्ण जगत का सृजनहार जिसकी महिमा अपरम्पार है, अपने लोगों में ही अनजान है। सोचिए, इस प्रकार मनुष्यों के साथ उसके संबन्ध पर कैसा प्रभाव पड़ता होगा? वह अपनी सृष्टि के अधीन था। वह अपने माता–पिता का आज्ञाकारी था। बच्चों को माता–पिता की आज्ञा मानना है परन्तु माता–पिता का सृजनहार उनकी आज्ञा माने बड़ी विचित्र बात है।

पिताजी तुम मुझे बताने वाले कौन होते हो मैं क्या करुं। मैं ने तो तुम्हारी रचना की है। अब धर्मगुरुओं के संबन्ध में देखिए। उनके धर्मगुरु ईश्वर भक्ति और ईश्वर पराणयता में सर्वोच्य थे। वे परमेश्वर के चुने हुए जन थे। वे भी यीशु को मनुष्य रूप में ही देखते थे और कहते थे– यूहन्ना 8– "तुझ में दुष्टात्मा है।" यही नहीं उन्होंने उसे जनता के सामने अपमानित किया। उसके मुंह पर थूका, उसे थप्पड़ मारे, कोड़े मारे परन्तु वह चुप रहा। उसने उन्हें रुकने की आज्ञा नहीं दी। यीशु दीन बना। वह अपनी सृष्टि के अधीन हो गया।

उसकी दीनता का दूसरा परिप्रेक्ष्य है कि वह अपने पिता का आज्ञाकारी था। मैं चाहता हूं कि आप यीशु में पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ संबन्ध देखें। हम देहधारण की चर्चा कर रहे थे कि –जितना अधिक आप इसकी महान सच्चाइयों में उतरेंगे उतना ही अधिक जटिल परन्तु आकर्षक वे होती जाएंगी। अब हम विचार करेंगे कि पुत्र परमेश्वर पिता परमेश्वर के कैसे अधीन था।

देखिए यूहन्ना अध्याय 3; पुत्र परमेश्वर यीशु बार–बार कहता है कि पिता परमेश्वर ने भेजा है और वह पिता की इच्छा पूर्ति के निमित्त समर्पित है। मैं आपको इसके कुछ संदर्भ दिखाना चाहता हूं जिन्हें आप रेखांकित करके हाशिया में लिख लें। यूहन्ना 3:17, "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।"

अब पद 34 देखें, "जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि वह आत्मा नाप नाप कर नहीं देता है।" यीशु को संसार में किसने भेजा? पिता परमेश्वर ने। इसे और अधिक स्पष्ट देखें। यूहन्ना अध्याय 5 पद 19, "यीशु उन्हें उत्तर देता है, "मैं तुमसे सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है..."" वह जो काम करता है किसे देखकर करता है? पिता परमेश्वर को। अर्थात यीशु पूर्ण रूप से पिता पर निर्भर था।

अध्याय 6 पद 38 देखें। यहां भी यीशु यही कहता है। यथातथा, यूहन्ना रचित सुसमाचार में 30 बार यीशु कहता है कि वह पिता परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। अतः 6:38, "मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने स्वर्ग से उतरा हूं।" वह परमेश्वर की इच्छा पूर्ति के निमित्त आया था। वह मन्दिर में उपदेश करते समय कहता है– 7:28, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं। मैं तो आप नहीं आया, परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते। मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसकी ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा है।"

अब अध्याय 8 पद 28 और 29 देखें। मैं आपको पिता की आज्ञाकारिता के निमित्त यीशु की दीनता दिखाना चाहता हूं, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं, मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूं। मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है, उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।" आप परिदृश्य समझ रहे है? देहधारी परमेश्वर, यीशु पिता परमेश्वर की इच्छा में ही था कि उसे प्रसन्न करे। यहां हम पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर के संबन्ध देख रहे हैं।

संपूर्ण नये नियम वरन् सुसमाचार –हमारे उद्धार के दृश्य में, पिता परमेश्वर या पवित्र आत्मा हमारे पापों के लिए क्रूस पर नहीं मरा। यह कार्य केवल पुत्र परमेश्वर के लिए रखा हुआ था। वह हमारे पापों के लिए मरा क्योंकि वह भेजा गया था और उद्धार की परम योजना जो पिता परमेश्वर की थी और स्वर्गारोहण पश्चात उसने पवित्र आत्मा भेजा जिसने हमारे जीवन में उद्धार को व्यावहारिक बनाया और आज भी वह, धर्मशास्त्र

के अनुसार हमारे जीवन में सक्रिय है और वचन को अन्तर्ग्रहण करने के लिए हमारी आखें, हमारे मन, और हमारी बुद्धि खोल देता है।

इस प्रकार हम पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर तीनों को उद्धार में, मसीह के निकट आने में, मसीह का स्वरूप अपनाने में सहकर्मी देखते हैं। हमें यह देहधारण में देखना है। अब इसका अर्थ यह नहीं कि तीन परमेश्वर हैं। नहीं, एक ही परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं– पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। पुत्र देहधारण में पिता के अधीन था।

इस संपूर्ण परिदृश्य का अर्थ क्या है, डेव? वह अपनी सृष्टि के अधीन था और वह अपने पिता का आज्ञाकारी था। इसका अभिप्राय यह है कि उसका देहधारी–मनुष्य का पुत्र होने से हमें परमेश्वर का पुत्र होने का अनन्त सौभाग्य संभव होता है। मैं चाहता हूं कि आप देखें कि देहधारण मात्र सैद्धान्तिक सत्य नहीं है। उसका देहधारण उसका सर्वश्रेष्ठ से दीन बनने के कारण वह हमें परमेश्वर की सन्तान होने का अनन्त सौभाग्य संभव बनाता है।

आप फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 9–11 देखें– जिसका अध्ययन हम अगले सत्र में करेंगे– परमेश्वर ने उसे सब नामों में श्रेष्ठ नाम दिया और उसे सर्वोच्य स्थान प्रदान किया। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को श्रेष्ठता प्रदान की परन्तु यहां हम देख रहे हैं कि वह श्रेष्ठ था और फिर दीन बना। यह कहां है? हम ऊंचे उठाए जाएंगे, इससे आपका अभिप्राय क्या है? हम यह तो जानते हैं कि चरनी में पड़ा यह बालक ऊंचा उठाया जाएगा परन्तु हम कैसे ऊंचे उठाए जाएंगे? यही तो सुसमाचार का सौंदर्य है।

क्योंकि वह दीन बना इसलिए हम यह जानते हैं कि उसके देहधारण के कारण हमें सर्वोच्य परमेश्वर की सन्तान कहलाने का अनन्त सौभाग्य प्राप्त है। 2 तीमुथियुस अध्याय 2 पद 11 में लिखा है, "यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएंगे भी; यदि हम धीरज सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे।" रोमियों अध्याय 8 में लिखा है, "आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और यदि सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुःख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं। क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं है।"

इस पद के महान सत्य पर विचार करें। इस संसार के कष्ट हम में प्रकट होनेवाली भावी महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं है। हम परमेश्वर के वारिस और मसीह यीशु के संगी वारिस हैं। उसके कष्टों में सहभागी होकर हम एक दिन उसकी महिमा में भी सहभागी होंगे।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि किसके लिए इसका महत्त्व बहुत है। हम पिछले दो अध्ययनों में देख रहे थे कि मनुष्य के साथ त्रासदी होती है। वह व्यक्ति जो किसी कष्टदायक रोग के कारण पीड़ित है और अथाह पीड़ा के कारण मर जाता है उसके लिए इस पद का महत्त्व गंभीर है। वह यहां कष्ट उठा रहा है और मरणोपरान्त मसीह की महिमा में सहभागी होता है। यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बात है। उसकी देह का क्षय नहीं होता है। वह समाप्त नहीं होता है।

2 कुरिन्थियों अध्याय 4 के अनुसार वह पिता के साथ घर में है और उसके कष्ट महिमा में बदल गए हैं। उसे परमेश्वर की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया है। क्या यह शुभ सन्देश नहीं है? जब आप सुनते हैं कि किसी को केंसर है या कोई जीवन में संघर्षरत है तो इस जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जो देहधारी परमेश्वर पुत्र में विश्वास करनेवालों की आरक्षित महिमा को नष्ट कर पाए। महिमा से दीन बनना जिससे कि हम ऊंचे उठाए जाएं।

दूसरा काम, वह देहधारण को जीवन से मृत्यु में ले जाता है जिससे कि हम जीवन पाएं। हम देहधारण के "क्यों?" के केन्द्र में जाते हैं। यूहन्ना अध्याय 1 में हमने देखा, यीशु का परिचय देखा था; आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। अब आगे पद 4 में वह कहता है, उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। यह जीवन है। यही मसीह यीशु है, वह जीवन है। उसमें जो कुछ भी है वह जीवन है, वह अनन्त जीवन है। परन्त फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 8 में लिखा है कि उसने, "मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

उसका जीवन मनुष्यों की ज्योति था परन्तु उसने मृत्यु सह कर आज्ञा मानी। मृत्यु से जीवन, क्यों? क्योंकि हम जीवन पाएं। यहां आकर हमें ख्रीस्त जयंती में गहराई देखना है कि इसकी प्रासंगिकता को समझें। जब हम चरनी में इस शिशु के बारे में सोचते हैं, जब हम ख्रीस्त जयंती की विशालता के बारे में सोचते हैं तो हम सोचते हैं वह हम पर परमेश्वर को प्रकट करने आया था– परमेश्वर हमारे साथ! यही परदृश्य था।

परन्तु उसका आगमन, उसका जन्म मात्र ही हमें उद्धार प्रदान नहीं करेगा। उसका निष्पाप जीवन हमारे उद्धार को क्रियान्वित कर सकता है। उसके सिद्ध एवं आदर्श जीवन में उद्धारक क्षमता नहीं है।

उसने अनेक काम किए जिनका हमारे उद्धार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह सत्य सिखाने आया था, वह स्वर्गीय पिता के राज्य के बारे में बताने आया था, वह रोगियों को चंगा करने आया था, वह अंधों को दृष्टिदान देने आया था, वह भूखों को खाना खिलाने आया था, वह समाज से बहिष्कृत, एवं परित्यक्त जनों की सुधि लेने आया था। उसने यह सब किया परन्तु इनसे उसका उद्देश्य सिद्ध नहीं होता है। उसका उद्देश्य अन्ततः, यह हैः मसीह यीशु चरनी में पैदा हुआ कि एक दिन क्रूस पर अपनी जान दे। वह मरने के लिए ही जन्मा था। अतः हम यीशु के जन्म के उद्देश्य के महत्त्व को देखें।

मृत्यु सबके जीवन का एक भाग है। यह प्रकृति है। परन्तु यीशु के लिए मृत्यु एक उद्देश्य था। मरने के लिए ही उसका जन्म हुआ था। चरनी में पड़े शिशु के कोमल हाथों में एक दिन कीले ठोंकी जाएंगी। उस शिशु की निर्मल देह में भाला छेदा जाएगा। वे नन्हे कोमल पांव क्रूस उठाकर पर्वत पर चढ़ेंगे। देहधारण का केन्द्र बैतलहम के झूले में नहीं था। कलवरी का क्रूस केन्द्र में था। सब कुछ उसी ओर अग्रसर था।

यह ख्रीस्त जन्म की कहानी के आरंभ से है। मैं आपको दिखाना चाहता हूं, मत्ती अध्याय 2 में हम ख्रीस्त जन्म का वृत्तान्त पढ़ें जो हम सामान्यतः जानते हैं। मैं चाहता हूं कि आप इसके केन्द्र में यीशु के जन्म का उद्देश्य उसकी मृत्यु देखें। पूर्व देश से ज्योतिषी आए थे। अतः उसमें कुछ मर्म की बात है। देखें पद 9–11, "वे राजा की बात सुनकर चले गए और जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था वह उनके आगे आगे चला; और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया। उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। उन्होंने उस घर पर पहुंचकर उस बालक को उसके माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उस बालक को प्रणाम किया, और अपना अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।" भेंट में क्या था? सोना, लोबान और गन्धरस।

मैं प्रचार नहीं कर रहा परन्तु इन तीन भेंटों पर ध्यान देना चाहता हूं। सोना वैभव का प्रतीक है, राजा की भेंट। अति अद्भुत– ऐसी दीन परिस्थितियों में सोने की भेंट! राजा के लिए।

दूसरी भेंट लोबान– पुराने नियम में याजक महापवित्र स्थान में लोबान जलाता था अर्थात परमेश्वर के समक्ष वह इस्राएल की मध्यस्थता करता था। यीशु हमारे लिए परमेश्वर के समक्ष मध्यस्थता करेगा। कैसी अद्भुत भेंटें, सोना और लोबान!

अब तीसरा ज्योतिषी क्या भेंट चढ़ाता है? यह एक शिशु के लिए विचित्र भेंट है। गन्धरस उस युग में मृतक शरीर पर लगाया जाता था कि मृतक शरीर की गन्ध दब जाए। अन्य दो ज्योतिषी उसकी भेंट को देखकर आश्चर्य अवश्य कर रह होंगे। यह ऐसा है जैसे किसी नवजात बालक को कफ़न भेंट किया जाए। इसका अर्थ क्या था। वह शिशु मरने के उद्देश्य से जन्मा है। उसके जन्म की प्रकृति मृत्यु थी।

केवल मृत्यु ही नहीं, फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 8 में लिखा है, मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा। कैसी मृत्यु? क्रूस की मृत्यु। यह उसके मनुष्यत्व की परिकाष्ठा है–पिता का आज्ञापालन। पिता की इच्छा के अधीन क्रूस की भयानक मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा। अब यदि हम अपनी संस्कृति से बाहर निकल फिलिप्पी के विश्वासियों के स्थान में खड़े होकर पौलुस का पत्र सुनें। हम सदा ही क्रूस की बात करते हैं और गले में भी पहनते हैं। यह अच्छा है। आपको यह समझना है कि जब वह क्रूस की मृत्यु के विषय में कहता है तब वहां वह गहरी सांस लेता है। वह क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा। क्रूस की मृत्यु की तीन सच्चाइयां हैं। यह एक लज्जाजनक मृत्यु होती थी। रोमी नागरिक को क्रूस की मृत्यु नहीं दी जाती थी। विद्रोही दास, देश द्रोही, उग्रवादी आदि को क्रूस की मृत्यु दी जाती थी। इस प्रकार अपराधी को ही नहीं अपराधी का नाम भी मिटा दिया जाता था। वे क्रूसित अपराधी के बारे में चर्चा भी नहीं करते थे। वे क्रूस का उल्लेख भी नहीं करते थे, क्रूसीकरण की चर्चा भी नहीं करते थे। क्रूस आम चर्चा का विषय भी नहीं था।

उस युग का एक अगुआ सिसेरो ने कहाः क्रूस का नाम दूर रहे, रोमियों की देह से ही नहीं, विचारों, आखों और कानों से भी। दूसरे शब्दों में उसकी चर्चा भी न की जाए। अपमान में यह लज्जाजनक ही नहीं चरमसीमा है। यह सार्वजनिक था कि अन्य सब के लिए निरोधक ठहरे। जगत का सृजनहार सब ठट्ठा करनेवालों के सामने अधर में लटका था। लज्जा क्रूसीकरण का ही नहीं, मृतकों के, आनेवालों के आपके और मेरे पापों की लज्जा भी उसके ऊपर डाल दी गई थी। यह लज्जा की परिकाष्ठा थी।

मैं ऐसा मार्ग सोच रहा था कि यीशु की क्रूस की मृत्यु अनुचित ठहराई जाए। पौलुस के लिए भी क्रूस की मृत्यु कहना अनुचित हो। यह ऐसा है जैसा कि आप बड़े दिन की दावत में हैं और कोई फांसी की चर्चा

करने लगे। यह लज्जाजनक ही नहीं अति कष्टदायक मृत्यु थी। हमने फिल्म में देखा होगा या पढ़ा होगा। यह अत्याचार और कष्ट की अनन्त सीमा थी। यीशु का ठट्ठा किया गया, उसे थप्पड़ मारे गए, कोड़े मारे गए, उसके मुंह पर थूंका गया, उसकी दाढ़ी नोची गई। खीस्त जयंती का वह शिशु कांटों का ताज पहनने के लिए पैदा हुआ था। लज्जाजनक मृत्यु, कष्टदायी मृत्यु और श्रापित मृत्यु।

हमें उन यहूदी श्रोतोओं के स्थान पर होना चाहिए जो इस पत्र का पढ़ा जाना सुन रहे थे। क्रूस की मृत्यु और उनके विचार तुरन्त पुराने नियम में जाते हैं। व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 पद 22 देखें। व्यवस्था में इस प्रकार की मृत्यु के लिए क्या लिखा है? "यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिससे वह मार डाला जाए, और तू उसके शव को वृक्ष पर लटका दे, तो वह शव रात को वृक्ष पर टंगा न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना, क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से श्रापित ठहरता है।" वह क्या है? परमेश्वर की ओर श्रापित। "इसलिए जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को अशुद्ध न करना।" शीघ्र–अति–शीघ्र शव को शिविर से बाहर कर देना क्योंकि पेड़ पर लटकी लाश श्रापित है।

नये नियम में यही कहा जा रहा है। यह यहूदियों के लिए ठोकर का कारण क्यों है? क्योंकि यीशु क्रूस पर लटकाया गया है। यह परमेश्वर का श्राप है। वह एक लज्जाजनक मृत्यु थी– कष्टदायी मृत्यु, श्रापित मृत्यु। क्यों? उसने ऐसा क्यों किया? यह देहधारण की वास्तविकता क्यों हुई? वह मरने के लिए पैदा हुआ था जिससे कि हम नया जन्म पाकर जीवित रहें। वह मृत्यु उठाने के लिए पैदा हुआ था जिससे कि 2000 वर्ष पश्चात आप और मैं जीवन हेतु नया जन्म पाएं। यही इसका सौंदर्य है कि उसकी क्रूस की मृत्यु किसी के नाम को मिटा देने के लिए थी। आज हम 2000 वर्ष पश्चात उसकी स्मृति में स्तुतिगान ही नहीं करते वरन् मृत्यु और क्रूस पर उसकी प्रभुता का आनन्द मनाते हैं। क्योंकि उसके द्वारा हमें जीवन प्राप्त है।

आप और मैं पाप के दास बने नहीं जी रहे हैं। हम अपने पाप के बन्दी नहीं हैं। हम स्वतंत्र हैं, जीने के लए अब और सदा–सर्वदा के लिए मुक्त। सदा स्मरण रखें! क्रूस पर उसकी लज्जा हमारा सम्मान बन गई। हमारी लज्जा की बातें– पाप, दुष्टता, विचार, कर्म, गुप्त बातें, परमेश्वर के समक्ष उस दिन खुलनेवाली बातें, सब उस पर डाल दी गई और हम पर उसकी धार्मिकता, उसका सौंदर्य, उसकी पवित्रता और उसकी मुक्ति डाल दी गई। उसकी लज्जा हमारा सम्मान बन गई।

उसकी लज्जा ही हमारा सम्मान नहीं वरन् उसका कष्ट, कष्टकारी मृत्यु हमारा आनन्द बन गई। उसके कोड़े खाने से क्या हुआ? हम चंगे हुए। यशायाह 53 और 1 पतरस 2:22–25 में यही लिखा है, "उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" उसकी पीड़ा हमारा आनन्द बन जाती है। इब्रानियों 2– हमें मृत्यु का भय नहीं रहा। हमें मृत्यु की पीड़ा का अब भय नहीं। क्यों? क्योंकि उसने देहधारण में हमारी पीड़ा उठा ली कि हमें आनन्द प्राप्त हो। उसकी पीड़ा हमारा आनन्द बन गई है। उसकी लज्जा हमारा सम्मान बन गई है। और अन्त में उसका श्रापित होना हमारे लिए आशीष का कारण बना। उसका श्राप हमारी आशीष बना।

मैं बाइबल में आपको यह दिखाना चाहता हूं।

हमने व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 के पद 22 और 23 पढ़े और श्रापित जन का परिदृश्य देखा। जो पेड़ पर लटका है वह श्रापित है। उसे शीघ्र–अति–शीघ्र दफन कर दो। गलातियों अध्याय 3 में पौलुस व्यवस्थाविवरण का संदर्भ देता है। देखिए पद 13, "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।'" वह यह संदर्भ कहां से दे रहा है? देखिए नीचे टिप्पणी में व्यवस्थाविवरण 21:23 दिया हुआ है। "यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।"

हम परमेश्वर के समक्ष अपने पापों के कारण श्रापित नहीं हैं क्योंकि जब हम उसमें विश्वास करते हैं जिसने हमारा श्राप अपने ऊपर ले लिया तब हम परमेश्वर के समक्ष अपने पापों के कारण श्रापित नहीं रहते। उसका श्राप हमारी आशीष बना, उसकी लज्जा हमारा सम्मान, उसकी ख्याति हमारा आनन्द और उसका श्राप हमारी आशीष। उसने मरने के लिए जीवन का त्याग किया जिससे कि आप और मैं जीवन पाएं। अबोधगम्य अनुग्रह, हम ऐसे अनुग्रह के योग्य नहीं हैं। हम अनुग्रह के समक्ष कभी श्रान्त न हों, शिथिल न हों। अनुग्रह के समझ न ऊंघे। यह एक महान सत्य है जो हमारे जीवन को अनन्त काल के लिए प्रभावित करता है।

महिमा से दीनता जिससे कि हम अनुग्रह द्वारा महिमा पाएं। मृत्यु से जीवन कि हम जीवन पाएं। हम अपने इन अध्ययनों में यह प्रयास कर रहे हैं कि देहधारण कागज़ों तक ही सीमित न रह जाए। हमारे जीवन में इसकी व्यावहारिकता क्या है? मैं चाहता हूं कि हम अनुग्रह का दूसरा परिदृश्य देखें। 2 कुरिन्थियों में वह हमारे जीवन में देहधारण की व्यावहारिकता समझने में सहायता करता है। पौलुस कुरिन्थ नगर के

विश्वासियों को पत्र लिख रहा है। वह शीघ्र ही उनके मध्य होगा क्योंकि वह अन्य कलीसियाओं से दान एकत्र करता हुआ यरूशलेम जा रहा है। वे इस समय कठिनाई में थे। अध्याय 8 के पूर्वार्ध में वह मकिदुनिया की कलीसियाओं के बारे में लिख रहा है कि वे ग़रीब थे परन्तु उन्होंने दान दिया। कुरिन्थ की कलीसिया संपन्न कलीसिया थी। अतः वह उनसे दान देने का आग्रह करता है। यदि आप पास्टर हैं तो आप अपनी कलीसिया को दान देने के लिए कैसे प्रेरित करेंगे? मैं चाहता हूं कि आप देखें, पौलुस कैसे देहधारण का प्रयोग करके दान को प्रोत्साहन देता है।

2 कुरिन्थियों अध्याय 8 पद 8, "मैं आज्ञा की रीति पर तो नहीं," ध्यान दीजिए पौलुस आज्ञा नहीं दे रहा है। "परन्तु दूसरों के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिए कहता हूं।" पद 9 में देहधारण आता है, "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।" देखिए पौलुस देहधारण को कैसे सामने लाकर उन्हें यरूशलेम की आवश्यकता ग्रस्त कलीसिया के लिए दान देने को प्रेरित करता है। वह कहता है, मसीह यीशु को देखो, वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि... तुम धनी हो जाओ। फिलिप्पियों अध्याय 2 में हम यही देख रहे हैं। उसका वैभव– उसका देवत्व, उसका ईश्वरत्व, उसकी महानता, उसका प्रभुत्व। संसार के सब संसाधन उसके हैं। सब कुछ उसका है परन्तु वह आपके कारण कंगाल बन गया। उसने यह कैसे किया? मानव स्वभाव अपना कर। वह हमारी समानता में हो गया। वह वचन अपमान और दरिद्रता के संसार में आ गया।

जगत का सृजनहार निराश्रय हुआ कि हम धनी हो जाएं। पौलुस यही कहता है कि उन्हें प्रभु यीशु मसीह को देखना चाहिए। यहां यीशु का पूर्ण नाम "प्रभु यीशु मसीह।" हमारे फिलिप्पियों 2 के अध्ययन विषय का परिदृश्य प्रदान करता है। प्रभु उसका ईश्वरत्व, वह परमेश्वर है, वह मनुष्य है। यीशु–वह उद्धारक है। मसीह–अभिषिक्त राजा। परमेश्वर उद्धारकर्ता और राजा। उस देखो! इस प्रकार पौलुस उन्हें दान देने के लिए प्रेरित करता है। प्रभु यीशु मसीह को देखो वह कैसा धनी है परन्तु तुम्हारे कारण कंगाल बन गया कि तुम धनवान हो जाओ।

कुरिन्थ की कलीसिया अपने संसाधन अपने ही पास रख कर बैठी थी। उनके पास बहुत था परन्तु वे दे नहीं रहे थे। पौलुस उनसे कहता है, आंखें खोल कर उद्धारकर्ता को देखो। उसने अपना सब कुछ त्याग दिया कि तुम धनवान हो जाओ। ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम उसके अनुसरण का दावा करते हो परन्तु

अपनी बहुतायत को दबा कर बैठे हो? तुमने मुट्ठी कस कर बांधी हुई है। यह तो समझ की बात दिखाई नहीं देती है।

वह वास्तव में कह रहा है कि सबसे पहले उसकी गरीबी देखो। उसने अपने सब अधिकार त्याग दिए और दास का स्वरूप अपनाया जिसे कोई अधिकार नहीं होता है। दूसरा उसने अपने संसाधन त्याग दिए। उसने अपने संसाधन किसे दिए? हमें दिए। इसका सौंदर्य और आप में से कुछ लोग आत्मिक कंगाल हैं। यदि आप सच कहें तो आप कहेंगे, "मैं यहां आ रहा हूं परन्तु भीतर खालीपन है, शून्य है। मुझे जहां होना चाहिए मैं वहां नहीं हूं या मैं जहां होना चाहता हूं वहां नहीं हूं।" ऐसा प्रतीत होता है कि मसीह मुझ से दूर है। आपको आत्मिक खालीपन का बोध होता है। मैं आपको स्मरण करवाना चाहता हूं कि मसीह के सब संसाधन आपके हैं– उसका अनुग्रह, उसका सामर्थ्य, उसकी धार्मिकता, उसकी पवित्रता, उसका उद्धार–वह जो कुछ सब उसने आपको दे दिया है।

बैरी आपको यह विश्वास न दिलाए कि आप कुछ नहीं हैं, या आपके पास कुछ नहीं है। परमेश्वर के अनुग्रह से आप खाली नहीं हैं। संसार चाहे कुछ भी कहे, मनुष्य कुछ भी कहे, विद्यार्थियों से माता–पिता कूच करने से पूर्व कुछ भी कहें, चाहे संसार में कुछ भी हो हम कभी खाली नहीं हैं। हम मसीह के साथ हैं। उसके साथ हम कभी खाली नहीं हैं। उसका सब कुछ हमारा है। वह हमें अपने संसाधन देता है।

अब मसीह की दरिद्रता देखें। उसने अपने अधिकार त्याग दिए। उसने अपने संसाधन त्याग दिए। तो फिर हमारा क्या होगा जो उसके अनुयायी हैं? उसका क्या होगा जिनके जीवन में मसीह का वास है क्योंकि हमने तो उस पर उद्धार के निमित्त विश्वास किया है? इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

इसके बारे में सोचिए। उसकी दरिद्रता ही नहीं देखें। हम संसार में उसके जन हैं। उसकी दरिद्रता देखकर उसके जन हों। उसकी दरिद्रता दिखाएं। आप यह कैसे करेंगे? हम अपने अधिकार त्याग देंगे। हम मसीह के अनुयायी हैं जो कंगाल बन गया कि अन्य धनी बन जाएं। हमें कोई अधिकार नहीं है। यही फिलिप्पियों अध्याय 2 का विषय है। यही 2 कुरिन्थियों अध्याय 8 का विषय है। पौलुस कह रहा है कि अपने स्वार्थ की अपेक्षा अन्यों की चिन्ता करें। स्वार्थी अभिलाषाओं का त्याग करो तो देख पाओगे, यह आपका विषय नहीं अन्यों के लिए आपके जीवनदान के बारे में है। तुम्हारा स्वभाव मसीह का सा हो और तब वह हमारे अध्ययन विषय पर आता है।

समय आ गया है कि मनुष्यों को देखो और अन्यों के लिए अपने अधिकारों की आहुति चढ़ाओ। उसके कहने का सारांश यह है, यदि तुम अपनी समृद्धि के लिए नहीं जी रहे हो, अपनी सफलता के लिए नहीं जी रहे हो, नाम कमाने के लिए नहीं जी रहे हो, तुम बहुत धन कमाने के लिए नहीं जी रहे हो, तुम बहत बड़ा मकान बनाने के लिए नहीं जी रहे हो, तुम करिन्थ का सपना पूरा करने के लिए नहीं जी रहे हो। तुम इन सब बातों के लिए नहीं जी रहे हो। तुम तो इन सबका त्याग कर चुके हो। अब तुम दूसरे के लिए जी रहे हो। आज हमारे लिए यही सन्देश है।

यदि हम अपने अधिकारों का त्याग न करें तो जैसा मसीह ने किया तो हम मसीह का चरित्र–चित्रण कैसे प्रकट करेंगे? हम अपने अधिकार का ही त्याग नहीं करते, हम अपने संसाधन अन्यों के साथ बांटते हैं। यहां देहधारण अत्यधिक व्यावहारिक होता है। पौलुस उनसे कह रहा है कि यरूशलेम में आवश्यकता है और उनके पास संसाधन हैं। समय आ गया है कि वे अपने संसाधन उपलब्ध कराएं कि यरूशलेम में सुसमाचार जाना जाए। वहां की कलीसिया को बल प्राप्त हो। उनको आवश्यकता है और उनके पास संसाधन हैं जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपे हैं। समय आ गया है कि वे गरीब बनें जिससे कि यरूशलेम की कलीसिया समृद्ध हो। हम अपने संसाधन अन्यों में बांटते हैं।

परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को देखें जो कंगाल बना कि हम धनी बनें। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उसके चरित्र को संसार में प्रकट करें– गरीब बनें कि अन्य समृद्ध हों।

सात वर्ष पहले मैं जे.आई. पेकर की पुस्तक, "नोइंग गॉड" (परमेश्वर को जानना) पढ़ रहा था। यह एक अति उत्तम पुस्तक है। उन्होंने देहधारण के विषय जो कहा वह मेरे मन को छू गया। उसका प्रभाव आज भी मुझ पर है। मेरी प्रार्थना है कि हम उसके प्रोत्साहन को गंभीरता से स्वीकार करेंगे। उन्होंने लिखा, "हम ख्रीस्त जयंती के बारे में बहुत बातें करते हैं, जिसका अर्थ पारिवारिक स्तर पर भावनात्मक आमोद–प्रमोद से अधिक नहीं परन्तु इसका अर्थ होना चाहिए कि मानव जीवन में उसका स्वभाव उत्पन्न करें जो हमारे लिए पहले दिन ही कंगाल हो गया।" ख्रीस्त जयंती का उत्साह ही प्रत्येक विश्वासी की पहचान संपूर्ण वर्ष होना चाहिए। आज यह हमारे लिए लज्जा और अपमान की बात है कि अनेक विश्वासी दृढ़ एवं रूढ़िवादी इस संसार में याजक और लेवियों का स्वभाव रखते हैं। अपने चारों ओर वे मनुष्यों को आवश्यकता ग्रस्त देखते हैं परन्तु एक हार्दिक मनोकामना या प्रार्थना के साथ कि परमेश्वर उनकी आवश्यकता पूरी करे, अपनी आंखे फेरकर मार्ग के दूसरी ओर से निकल जाते हैं। यह ख्रीस्त जयंती का उत्साह नहीं है न ही मसीही स्वभाव

है। अनेक हैं जिनके जीवन की एक ही अभिलाषा है कि एक मध्यवर्गीय अच्छा सा मसीही परिवार बनाएं और मध्यवर्गीय मसीह मित्र बनाएं और अपनी सन्तान को मध्यवर्गीय मसीही मार्गों में बढ़ाएं और वे निम्न वर्ग को –विश्वासी और अविश्वासी –स्वयं संभलने के लिए छोड़ देते हैं। ख्रीस्त जयंती का उत्साह मसीही अभिमान में दमकता नहीं है। ख्रीस्त जयंती की भावना उनकी भावना है जो अपने स्वामी की नाईं स्वयं को गरीब बनाने के लिए संपूर्ण जीवन लगा देते हैं– अपने साथी मनुष्य को समृद्ध बनाने के लिए व्यय करते हैं वरन् स्वयं ही व्यय हो जाते हैं। अपने मित्रों की ही नहीं, अन्यों की भलाई में समय लगाते हैं, चिन्ता, करते हैं और जैसी भी आवश्यकता उनके पाप की हो उनकी सुधि लेते हैं।

मैं इसमें आज भी ताज़गी पाता हूं। हम आज अपने आप को मूर्ख न बनाएं। देहधारण में आनन्दित हों परन्तु आवश्यकताओं के समक्ष अपने संसाधन रोके रहें।

वह कंगाल बना कि हम धनी बन जाएं। अन्तिम बात, परमेश्वर ने उसके पुत्र की दीनता, बलिदान और स्वतंत्रता द्वारा अपने अनुग्रह से विस्मित किया है। वह महिमा से दीन बना कि एक दिन हम महिमा पाएं। परमेश्वर की स्तुति हो। उसने जीवन त्याग मृत्यु को अपनाया कि हम जीवन पाएं। वह धनी से कंगाल बना कि हम आत्मिक समृद्धि पाएं। उसके सब संसाधन हमें दिए गए हैं।

उसके पुत्र की दीनता, बलिदान, और स्वतंत्रता परन्तु परमेश्वर का काम पूरा नहीं हुआ है। उसकी योजना बदली नहीं है। परमेश्वर सब जातियों को अपने अनुग्रह से, किसके? अपने लोगों की दीनता, त्याग और मुक्ति के द्वारा अपने अनुग्रह से विस्मित करना चाहता है। वह अपनी कलीसिया द्वारा वही दीनता, आत्मत्याग, मुक्ति प्रकट करना चाहता है। आज हमारे जीवन में देहधारण लाया गया है।

अतः हम परमेश्वर के वचन की प्रतिक्रिया में सबसे पहले मसीह के संसाधनों में उत्सव मनाएंगे। यदि आप मसीह के अनुयायी हैं तो मैं आपको आमंत्रित करना चाहता हूं कि आप उसकी महिमा और दीनता पर ध्यान करें। उसके जीवन और मृत्यु और उसका धन और उसकी दरिद्रता ध्यान करें। यदि आप आत्मिक कंगाल हैं तो मैं प्रार्थना करता हूं कि वह आपको अपने सब संसाधनों से पोषित करे।

और वे जो मसीह के अनुयायी नहीं हैं अर्थात उसमें विश्वास नहीं किया हो, तो आपके पास अवसर है कि उसमें विश्वास करें और इस अध्ययन में देखे गए सत्य अपने जीवन की वास्तविकता बनाएं। सिर झुकाएं और कहें, हे परमेश्वर, मैं तुझ में विश्वास करता हूं। यीशु में विश्वास करता हूं। मैं विश्वास करता हूं कि तू

मेरे पाप क्षमा करेगा। और मैं उसमें विश्वास करता हूं कि वह मुझे मृत्यु से जीवन में लाएगा, लज्जा से सम्मान में लाएगा। आप आज पहली बार ऐसा करें और इसे आपके जीवन में मसीह के काम की गवाही होने दें।

मसीह के संसाधनों का पोषण पाने के बाद हम अपने संसाधन देंगे।

हे परमेश्वर, हम तेरे देहधारण की महानता के लिए धन्यवाद देते हैं और प्रभु यीशु हम तेरे सामने घुटने टेकते हैं और तेरी दीनता के लिए, तेरी मृत्यु के लिए, तेरी दरिद्रता के लिए जो हमें आज जो हैं, सो बनाती है, तेरी स्तुति करते हैं। हमें आज गाने का उत्सव मनाने का कारण प्रदान कर। तेरी महिमा हो। हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें ऐसे मनुष्य बना जो संसार में तेरे समान महिमा प्रकट कर पाएं। हमें ऐसे मनुष्य बना जो तेरे अनुग्रह को उन सब बातों के साथ जो तू ने हमें सौंपी हैं –हमारे अधिकार और हमारे संसाधन को ज्यों का त्यों देखें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं, आमीन!